सारांश (ABSTRACT)

दुष्यंत कुमार की कविता में सामाजिक यथार्थ

दुष्यंत कुमार नई कविता के महत्त्वपूर्ण कवि हैं । नई कविता के ज्यादातर कवियों को अज्ञेय द्वारा संपादित 'सप्तकों' से पहचान मिली । चाहे वे मुक्तिबोध हों, केदारनाथ अग्रवाल हों या भवानी प्रसाद मिश्र । दुष्यंत कुमार सप्तक के कवि नहीं हैं, बावजूद इसके उनकी ख्याति इन कवियों से कम नहीं है । उन्होंने अपनी रचनाओं से पहचान बनाई है । अपनी सहजाभिव्यक्ति और जनोन्मुख सृजनात्मकता के सहारे वे पाठक वर्ग के जनप्रिय कवि बन गये । उनकी कविताएँ आरम्भ से व्यक्तिगत कुंठा की अभिव्यक्ति के विरुद्ध रही है । जहाँ उस दौर के अन्य कवि नयेपन के नाम पर अपनी हताशा और कुंठा को काव्यात्मक रूप दे रहे थे, वहीं दुष्यंत कुमार का साहित्य लोक की ओर उन्मुख हो रहा था । अपने भीतर 'करोड़ों लोगों' को महसूस करने वाले कवि दुष्यंत कुमार ने अपनी रचनात्मकता को उन 'करोड़ों लोगों' की आशा-आकांक्षा के साथ जोड़ दिया, जो स्वातंत्र्योत्तर जनविरोधी व्यवस्था से आक्रांत हो रहे थे ।

दुष्यंत कुमार की कविताओं से मेरा व्यापक परिचय स्नातकोत्तर में हुआ । इसके पूर्व मैंने उनकी गज़लों की कुछ पंक्तियाँ यत्र-तत्र पढ़ी एवं सुनी थी । जब मैंने उनकी अन्य कविताओं का अध्ययन किया तो मैं उनकी रचनाओं में व्यक्त सामाजिक यथार्थ से काफी प्रभावित हुई । उनकी आरम्भिक अधूरी कविताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि वे लेखन के आरम्भिक दौर से ही यथार्थ को अंकित

करने में रुचि रखते थे । उनके तीनों काव्य–संग्रह – 'सूर्य का स्वागत','आवाजों के घेरे' और 'जलते हुए वन का वसंत' की कविताओं में समाज की वास्तविकता को चित्रित किया गया है ।उन्होंने समाज की वास्तविकता को केवल चित्रित ही नहीं किया, अपितु अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को महसूस करते हुए तीखे तेवर के साथ समाज–व्यवस्था की अमानवीयता की आलोचना भी की । वे एक जन प्रतिबद्ध कवि हैं और उनकी जन–प्रतिबद्धता का प्रमाण उनके काव्य–संसार में प्रवेश करते ही मिल जाता है ।

दुष्यंत कुमार की कविताएँ स्वातंत्र्योत्तर समाज का अक्स हैं । उन्होंने अपनी कविताओं में अपने समय के ज्वलंत विषयों को उठाया है और उनपर गहराई से चिंतन मनन किया है । स्वतंत्रता के बाद का राजनीतिक ड्रामा उनकी कविताओं में प्रत्यक्ष हो उठा है । राजनीतिज्ञों द्वारा लोकतंत्र के नाम पर जनता को मूलाधिकारों से वंचित कर 'वोट बैंक' में बदलने की साजिश जनकवि दुष्यंत कुमार की आँखों से छिप न सकी । कवि के शब्द फूट पड़ते हैं – 'ये रोशनी है हकीकत में एक छल लोगो,/कि जैसे जल में झलकता हुआ महल लोगो!' दुष्यंत कुमार सामाजिक सरोकार के कवि हैं । अपनी कविताओं में उन्होंने राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विसंगतियों और विडंबनाओं को उद्घाटित किया है । दुष्यंत कुमार सामान्यजन की पीड़ा से खुद को सम्पृक्त करनेवाले कवि हैं । 'मेरे लिए मनुष्य–मात्र की अवमानना सबसे अधिक कष्टप्रद है ।'– कहने वाले कवि दुष्यंत की कविताएँ इसका साक्ष्य है कि कवि ने सामान्यजन को उनकी पीड़ा से मुक्त कराने के लिए जनविरोधी व्यवस्था से सीधे-सीधे मुठभेड़ की है । एक

सरकारी मुलाजिम होते हुए आपातकालीन तानाशाही के दौर में अपनी कविताओं के द्वारा कवि दुष्यंत कुमार ने जिस बेबाक तरीके से सरकारी तंत्र की खामियों की आलोचना की है, वह उस दौर के अन्य रचनाकारों से उन्हें अलगाता है । यही वे कारण हैं जिसने मुझे दुष्यंत कुमार पर शोध-कार्य करने की ओर प्रवृत किया । सामाजिक यथार्थ उनकी कविताओं के केंद्र में है । आज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विसंगतियाँ अपने चरम पर हैं । ऐसी स्थिति में दुष्यंत कुमार की कविता खास अर्थ देती है । अत: मैंने अपने शोध–प्रबंध में सामाजिक यथार्थ के आलोक में उनकी कविताओं का समग्र मूल्यांकन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया है ।

'दुष्यंत कुमार की कविता में सामाजिक यथार्थ' नामक इस शोध–प्रबंध में दुष्यंत कुमार के प्रकाशित काव्य–संग्रहों के अलावा उनकी आरम्भिक, अधूरी और संग्रहों से इतर कविताओं का भी विश्लेषण किया गया है । इस शोध–प्रबंध को अध्ययन की सुविधा के लिए सात अध्यायों में विभाजित किया गया है । इस शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय 'सामाजिक यथार्थ : अर्थ एवं स्वरूप' में यथार्थ की विस्तार से चर्चा करते हुए हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ के व्यापक परिदृश्य का विवेचन–विश्लेषण किया गया है । हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ एक विचारधारा के रूप में भले ही स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में अभिव्यक्त हुआ, पर इसकी पृष्ठभूमि बहुत पहले ही दिखाई पड़ती है । मूलत: सामाजिक यथार्थ के विकास को इस अध्याय के अंतर्गत समझने का प्रयास हुआ है ।

'दुष्यंत कुमार की काव्य–यात्रा' के अंतर्गत कवि की काव्य-यात्रा को उनकी आरम्भिक अधूरी कविताओं तथा उनके तीन काव्य–संग्रहों (1) 'सूर्य का स्वागत', (2) 'आवाजों के घेरे' और (3) 'जलते हुए वन का वसंत', एकमात्र गज़ल–संग्रह 'साये में धूप' के आधार पर समझने का प्रयास हुआ है । उनकी आरम्भिक अधूरी कविताओं में जहाँ सामाजिक यथार्थ का आरम्भिक रूप दिखाई पड़ता है, वहीं उनकी अंतिम कृति 'साये में धूप' का यथार्थ तीखा और कड़वा है । कवि ने अपने समय की तल्ख सच्चाई को बेखौफ और बेबाक होकर चित्रित किया है । उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता स्पष्ट है । उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ केंद्रीय रूप में विद्यमान है । इस अध्याय में कवि दुष्यंत के कृतित्व पर व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

'दुष्यंत कुमार की कविता में सामाजिक यथार्थ' के अंतर्गत उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है । दुष्यंत कुमार ने सामाजिक यथार्थ के बहुआयामी पहलुओं को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है । कवि ने अपने समय को अपनी कविताओं में साक्षात् कर दिया है । समसामयिक राजनीतिक का लोकविरोधी रूप, राजनेताओं के दोहरे आचरण, उनकी कथनी और करनी के पार्थक्य, उनके आश्वासनों की वास्तविकता, सामान्यजन के साथ उनके आत्मीय संबंध की वास्तविकता आदि को कवि ने परत–दर–परत उघारकर रख दिया है । आमजन के सन्दर्भ में आजादी और लोकतंत्र की सार्थकता पर कवि सवाल खड़ा करते हैं । उनकी कविताओं में स्त्री और बेरोजगार युवक के जीवन की त्रासदायक नियति को स्वर मिला है । कवि ने

सामान्य जन के रोजमर्रा के जीवन की जद्दोजहद के यथार्थ को मार्मिक ढ़ंग से रूपायित किया है । अपसंस्कृति के दुष्प्रभाव को ग्रामीण और शहरी जीवन के सन्दर्भ दिखाकर मनुष्य के नैतिक रूप में विघटित होने की प्रक्रिया को दर्शाया है ।

सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने में व्यंग्य सबसे अधिक समर्थ है । व्यंग्य रचनाकार की गहन सामाजिक प्रतिबद्धता का परिणाम होता है । स्वातंत्र्योत्तर समाज का यथार्थ सामान्यजन के सन्दर्भ में भयावह और क्रूर हो चुका था, चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो या सांस्कृतिक क्षेत्र, सभी ओर विसंगति और विद्रूपता छाई हुई थी । यहाँ तक कि साहित्यिक क्षेत्र में भी विसंगतियाँ बढ़ती जा रही थी । इन सारी स्थितियों को व्यंग्यात्मक रूप में 'दुष्यंत कुमार की कविता में व्यंग्य' के अंतर्गत विश्लेषित किया गया है ।

कवि दुष्यंत कुमार ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जगत की सच्चाई को अपने काव्य–संसार में स्थान दिया है । इन सबके अलावा भी उनके काव्य–संसार में कुछ ऐसी कविताएँ हैं जो कवि को अलग पहचान देती हैं । उनके काव्य–संसार में प्रेम और सौंदर्य से सम्बंधित कविताएँ हैं, जन–समर्पित राजनीतिक एवं साहित्यिक व्यक्तित्व की प्रशस्ति में लिखी हुई कविताएँ हैं । 'दुष्यंत कुमार की कविता के अन्य पहलू' में इन पक्षों का विस्तार से अध्ययन किया गया है । समग्रत: दुष्यंत कुमार की जीवन दृष्टि मूलत: मानवतावादी रही है । वे किसी भी विचारधारा के अंध समर्थक नहीं रहे । उनकी कविताओं में जो आशा और आस्था का स्वर मुखरित हुआ है, वह उनकी जीवन दृष्टि का परिणाम है । इस शोध–प्रबंध का छठा अध्याय 'दुष्यंत कुमार की जीवन

दृष्टि' में उनकी जीवन दृष्टि की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है ।

अंतिम अध्याय है –'दुष्यंत कुमार का काव्य–शिल्प'। दुष्यंत कुमार ने काव्य–वस्तु के अनुरूप भाषा को सहज और आत्मीय बनाने की कोशिश की है । उन्होंने गीत से काव्य–लेखन आरंभ किया और अंततः गज़ल की ओर मुड़ गये । उनके काव्य शिल्प की विशेषताओं का अध्ययन इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य है ।

इस शोध–कार्य के दौरान प्रसिद्ध समीक्षक एवं दुष्यंत कुमार के करीबी मित्र डॉ. धनंजय वर्मा तथा दुष्यंत रचनावली के संपादक डॉ. विजय बहादुर सिंह से संवाद का मौका भी मिला । अतः इन दोनों संवादों को परिशिष्ट के अंतर्गत रखा गया है ।

दुष्यंत कुमार अपने युग के सर्वाधिक जनप्रिय कवि रहे हैं और आज भी उनके पाठकों की संख्या में निरंतर अभिवृद्धि हो रही है । कवि दुष्यंत कुमार की कविताओं में सामाजिक यथार्थ का जो बहुआयामी रूप विन्यस्त है, वह उन्हें कबीर की परम्परा का संवाहक बनाता है । उनकी कविता में एक विशेष आकर्षण है, क्योंकि उसमें जीवन की सच्चाई है, पाठक की अपनी भोगी हुई जिन्दगी की तस्वीर है, आशा है, प्रेरणा है । दुष्यंत कुमार पर किया गया यह शोध कार्य कवि के मानवीय दृष्टिकोण और सामाजिक सरोकार को समझने में सहायक होगा ।